आईसीएआर-आईवीआरआई, मुक्तेश्वर द्वारा ग्राम हरिनगर में वर्मी कम्पोस्टिंग पर ऑफ-कैंपस प्रशिक्षण आयोजित

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-आईवीआरआई), मुक्तेश्वर के **प्रसार शिक्षा अनुभाग** द्वारा 2 नवंबर 2026 को ग्राम हरिनगर में किसानों के लिए वर्मी कम्पोस्ट तैयार करने एवं उसके उपयोग विषय पर एक ऑफ-कैंपस प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के संयुक्त निदेशक के मार्गदर्शन एवं पर्यवेक्षण में किया गया तथा इसका समन्वय डॉ. मनीष तोमर ने किया।

प्रशिक्षण के दौरान डॉ. मनीष तोमर ने किसानों के खेतों एवं वर्मी कम्पोस्ट तैयार करने के स्थलों का भ्रमण किया तथा उन्हें गोबर की खाद (FYM) का बेहतर उपयोग करते हुए उसे गुणवत्तापूर्ण वर्मी कम्पोस्ट में परिवर्तित करने की प्रक्रिया समझाई। उन्होंने वर्मी कम्पोस्ट इकाई की स्थापना के लिए आवश्यक सावधानियों, उपयुक्त स्थान के चयन, नमी एवं तापमान के रखरखाव तथा केंचुओं की उचित देखभाल के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने वर्मी कम्पोस्ट तैयार करने की विभिन्न प्रक्रियाओं, वर्मीवॉश के उपयोग तथा वर्मी कल्चर के कार्य करने के तरीके को भी समझाया। उन्होंने बताया कि कृषि अपशिष्ट एवं गोबर का उचित प्रबंधन कर किसान उपयोगी जैविक खाद तैयार कर सकते हैं, जिससे मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार और रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम करने में सहायता मिल सकती है।

इस अवसर पर डॉ. एम. सामीनाथन ने किसानों को मृदा नमूना संग्रहण एवं मृदा परीक्षण के महत्व के बारे में जानकारी दी। उन्होंने मृदा स्वास्थ्य कार्ड के उपयोग और उसमें उपलब्ध जानकारी के आधार पर खेतों में पोषक तत्वों की आवश्यकताओं को समझने तथा संतुलित उर्वरक उपयोग की योजना बनाने के बारे में बताया। उन्होंने किसानों को नियमित रूप से मृदा स्वास्थ्य की निगरानी करने और मृदा परीक्षण के आधार पर कृषि संबंधी निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया।

डॉ. सामीनाथन ने पशुधन प्रबंधन पर भी प्रकाश डालते हुए किसानों को अपने पशुओं के स्वास्थ्य की नियमित निगरानी करने, पशुओं का समय पर टीकाकरण कराने तथा आवश्यकतानुसार पशु चिकित्सकीय परामर्श लेने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाने के लिए समय पर टीकाकरण और नियमित स्वास्थ्य देखभाल अत्यंत आवश्यक है।

कार्यक्रम के माध्यम से किसानों को जैविक खाद उत्पादन, वर्मी कम्पोस्ट एवं वर्मीवॉश के उपयोग, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन और पशुधन की वैज्ञानिक देखभाल के बारे में व्यावहारिक एवं उपयोगी जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. मनीष तोमर द्वारा संयुक्त निदेशक के मार्गदर्शन एवं पर्यवेक्षण में किया गया।